CLASS : 12th (Sr. Secondary) **4362/4312**

Series : SS-M/2019 ***SET : A, B, C & D***

Total No. of Printed Pages : **48**

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

इतिहास

HISTORY

ACADEMIC/OPEN

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.

(ii) Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.

(iii) Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.

(iv) Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.

(v) Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.

(vi) *A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.*

(vii) *If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.*

(viii) *If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.*

(ix) *Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.*

(x) *Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.*

(xi) *Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.*

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) *अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।*

(ii) *शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।*

(iii) *परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।*

(iv) *वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।*

(v) *भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।*

(vi) *मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही है, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।*

SET – A

खण्ड – क

(निबन्धात्मक प्रश्न)

1. हड़प्पाई लोगों में शिल्प उत्पादन में काफी रूची थी जिसमें मनके बनाने में विशेष ध्यान देते थे मनके या शिल्प उत्पादन के लिए प्रयुक्त कच्चे माल की जानकारी :

हड़प्पा सभ्यता में चन्हूदड़ो, मोहनजोदड़ो की तुलना में एक बहुत ही छोटी सी बस्ती थी, जो पूर्ण रूप से शिल्प उत्पादन से जुड़ी हुई थी। शिल्प कार्यों में मनके बनाना, शंख की कटाई, धातु कर्म, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना शामिल थे।

मनकों के निर्माण में प्रयुक्त पदार्थों में विशेष थे : कार्नीलियन (लाल रंग का) जैसपर, स्फटिक, क्वार्ट्ज तथा खेलखड़ी जैसे – पत्थर, तांबा, कांसा तथा सोने जैसी धातुएँ तथा शंख फयान्स और पक्की मिट्टी सभी का प्रयोग मनके बनाने के लिए होता था।

चन्हूदड़ो के अतिरिक्त नागेश्वर तथा बालाकोट दोनों बस्तियाँ समुद्रतट के समीप स्थित थीं, ये शंख, सेलती हुई बस्तियों जिनमें चूड़ियाँ, करछियाँ तथा पच्चीकारी की वस्तुएँ शामिल हैं के निर्माण के विशेष केन्द्र थे जहाँ से ये माल दूसरी बस्तियों तक ले जाया जाता था। 6

अथवा

हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारण :

(i) बाढ़े और भूकम्प

(ii) सिंधु नदी का मार्ग बदलना

(iii) क्षेत्र में बढ़ती शुष्कता और घग्घर नदी का सूख जाना

(iv) आर्यों के आक्रमण

(v) पर्यावरण असन्तुलन तथा आर्थिक-राजनैतिक प्रणाली का कमजोर होना। 6

2. मीराबाई के जीवन और उद्देश्य :

मीराबाई मारवाड़ के मेहता जिले के एक राजपूत राजकुमारी थी। उनका विवाह उन की इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया वंश में कर दिया गया। उन्होंने अपने पति की आज्ञा की परवाह न करते हुए पत्नी और मां के परम्परागत दायित्वों को निभाने से इन्कार कर दिया और विष्णु के अवतार कृष्ण को अपना एक मात्र पति मान लिया। उनके ससुराल वालों ने उन्हें विष देने का प्रयत्न किया। परन्तु वह राज महल को छोड़कर एक घुमक्कड़ गायिका बन गई। उन्होंने कृष्ण भक्ति से प्रेरित होकर कई भजनों की रचना की। इनके गुरु रैदास थे।

शिक्षाएँ :

(i) मीराबाई ने जातिवादी समाज की रूढियों का उल्लघंन किया।

(ii) उन्होंने कृष्ण भक्ति अर्थात् प्रेमपूर्वक कृष्णा की पूजा करने की शिक्षा दी।

(iii) उन्होंने अपने अनुयायी बनाकर किसी निजी मंडल बनाने का विरोध किया।

(iv) उन्होंने सादा जीवन व्यतीत करने पर जोर डाला। उन्होंने स्वयं सफेद वस्त्र पहन कर सन्यासिन के वस्त्र धारण किया।6

अथवा

सूफीमत के मुख्य धार्मिक विश्वासों : इस्लाम की आरम्भिक शताब्दियों में कुछ अध्यात्मिक लोगों का झुकाव रहस्यवाद तथा वैराग की ओर बढ़ने लगा। इन लोगों को सूफी कहा गया है सूफीमत के धार्मिक विश्वासों तथा आधारों का वर्णन इस प्रकार है :

(i) सूफीयों ने रूढ़ीवादी परिभाषायों तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (ईश्वर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की। उन्होंने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।

(ii) उन्होंने मुक्ति पाने के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।

(iii) उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद को इंसान-ए-कामिल बताते हुए उनका अनुसरण करने की शिक्षा दी।

(iv) वे किसी खलीफा या पीर की देखरेख में जिक्र (नाम का जाप) चिंतन, सभा (गाना) खास (नृत्य) नीति चर्चा, सांस पर नियन्त्रण आदि क्रियाओं द्वारा मन को प्रशिक्षित करने के पक्ष में थे।

(v) वे सदाचारियों और मानव के प्रति दयालुता पर जोर देते थे।

(vi) वे सूफी सन्तों की दरगाहों पर जियारत (तीर्थयात्रा) करते थे। नाच और संगीत भी जियारत का भाग थे। वे अध्यात्मिक

संगीत का महफिल द्वारा ईश्वर की उपासना में विश्वास करते थे।

(vii) सूफी संतों के अनुसार ईश्वर एक है, सर्वशक्तिमान है, उसकी सच्चे मन से भक्ति करनी चाहिए। गुरु गति का मार्ग दिखाता है मनुष्य को संसारिक वस्तुओं का मोह छोड़ना चाहिए, जरूरत मंदों की सेवा करनी चाहिए। 6

3. अवध में विद्रोह ..... के कारणों की समीक्षा

1857 ई० का विद्रोह का व्यापक रूप अवध में देखने को मिलता है। यहाँ के किसान व दस्तकार से लेकर ताल्लुकदार और नवाबी परिवार के सदस्यों सहित सभी वर्गों ने वीरतापूर्वक संघर्ष किया। हर एक गाँव से लोग विद्रोह में शामिल हुए। ताल्लुकदारों ने उन सभी गाँवों पर अपना पुनः अधिकार कर लिया जो अवध विलय से पहले उनके पास थे किसानों ने भी उनका साथ दिया। इस व्यापक विद्रोह के निम्नलिखित कारण थे :

(i) अवध का विलय

(ii) ताल्लुकदारों की जागीरें छीनना

(iii) दोषपूर्ण भू-राजस्व व्यवस्था

(iv) किसानों से अधिक राजस्व की माँग

(v) सामाजिक व्यवस्था को भंग करना

(vi) अवध के लोगों की नवाब के प्रति सम्मान एवं निष्ठा 6

अथवा

विद्रोहियों के बीच एकता स्थापित :

(i) 1857 ई० में क्रान्तिकारियों ने अपनी घोषणाओं में जाति और धर्म के भेदभाव के बिना समाज के सभी लोगों को एक मंच पर इकट्ठा करने का आह्वान किया गया।

(ii) यद्यपि कुछ घोषणाएँ मुस्लिम शासकों द्वारा जारी की जाती थी परन्तु फिर भी उसमें हिन्दुओं की भावनाओं का ध्यान रखा जाता था।

(iii) इस विद्रोह को एक ऐसे युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया गया जिसमें हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को ही समान रूप से प्रभावित करते थे।

(iv) इश्तहारों में अंग्रेजों से पहले के हिन्दू-मुस्लिम अतीत की ओर संकेत किया जाता था और मुगल साम्राज्य के अधीन विभिन्न समुदायों के सहअस्तित्व का गौरवगान किया जाता था।

(v) बहादुरशाह के नाम से जारी घोषणा में मुहम्मद और महावीर, दोनों की दुहाई देते हुए जनता से हम इस लड़ाई में शामिल होने का आह्वान किया गया था। यद्यपि अंग्रेजों ने 1857 ई० में बरेली के हिन्दुओं को भड़काने के लिए, 50,000 रु० खर्च किए परन्तु उनकी कोशिशें असफल रहीं। 6

4. असहयोग आन्दोलन के मुख्य कारण :

(i) प्रथम युद्ध के प्रभाव

(ii) रौलट ऐक्ट

(iii) जलियाँवाला बाग की घटना

(iv) खिलाफत आंदोलन 6

अथवा

गोलमेज़ सम्मेलनों में वार्ता का कोई नतीजा क्यों नहीं निकल पाया जिससे आन्दोलन को समाप्त करने के लिए अंग्रेज सरकार ने लंदन में गोलमेज़ सम्मेलनों का आयोजन शुरू किया। पहला गोलमेज़ सम्मेलन नवम्बर, 1930 में आयोजित किया गया। जिसमें देश के प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। इसी कारण अंततः यह बैठक निरर्थक साबित हुई। जनवरी, 1931 ई० में गाँधी जी को जेल से रिहा किया गया। अगले ही महीने वायसराय के साथ उनकी कई लंबी बैठकें हुईं।

उन्हीं बैठकों के बाद "गाँधी-इर्विन समझौते" पर सहमति बनी जिसकी शर्तों में सविनय आन्दोलन को वापिस लेना तथा अगले गोलमेज़ सम्मेलन में भाग लेना स्वीकार करना शामिल था।

अतः दूसरा गोलमेज़ सम्मेलन 1931 ई० के आखिर में लंदन में आयोजित हुआ उसमें गाँधी जी कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे। गाँधी जी का कहना था कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है। इस दावे को तीन पार्टियों ने चुनौती दी। मुस्लिम लीग का कहना था कि वह मुस्लिम अल्पसंख्यकों के हित में काम करती है। दूसरे राजे-रजवाड़ों का दावा था कि कांग्रेस का उनके नियन्त्रण वाले भू-भाग पर कोई अधिकार नहीं है। तीसरी चुनौती तेज-तर्रार वकील और विचारक बी० आर० अंबेडकर की तरफ से थी जिनका कहना था कि गाँधी जी और कांग्रेस पार्टी निचली जातियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते लंदन में हुआ यह सम्मेलन किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सका इसलिए गाँधी जी को खाली हाथ लौटना पड़ा था। इसी प्रकार तीसरा सम्मेलन (1932) भी असफल रहा। 6

खण्ड - ख

(लघुत्तरीय प्रश्न)

5. मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण :

(i) अयोग्य उत्तराधिकारी

(ii) विशाल साम्राज्य

(iii) उत्तराधिकार के नियम का अभाव

(iv) आंतरिक विद्रोह

(v) धन का अभाव

(vi) सैनिक शक्ति की कमी

(vii) विदेशी आक्रमण

(viii) ब्राह्मणों की शत्रुता 4

6. किताब-उल-हिन्द अल-बेरूनी द्वारा रचित सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसे तहकीक-ए-हिन्द भी कहा जाता है। मौलिक तौर पर ग्रंथ अरबी भाषा में लिखा गया है तथा बाद में यह विश्व की प्रमुख भाषाओं में अनुवादित हुआ। इसमें कुल 80 अध्याय हैं जिनमें भारत के धर्म, दर्शन, समाज, परम्पराओं, रीति-रिवाजों के अतिरिक्त खगोल विज्ञान, चिकित्सा व कानून, न्याय इत्यादि विषयों का विस्तार से वर्णन किया गया है। 4

7. कृष्ण देव राय के शासन की मुख्य विशेषता विस्तार तथा सुदृढ़ीकरण था। 1512 ई० तक उसने तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों के बीच के क्षेत्र रायपुर दोआब पर अधिकार कर लिया। फिर उसने उड़ीसा के शासकों का दमन किया। 1520 ई० में उसने बीजापुर के सुल्तान को बुरी तरह पराजित किया। 4

8. मुगलकालीन पंचायत का एक बड़ा काम यह तसल्ली करना था कि गाँव में रहने वाले अलग-अलग समुदायों के लोग अपनी जाति की हदों के अंदर रहें । पूर्वी भारत में सभी शदियाँ मंडल की मौजूदगी में होती थी।

पंचायतों को जुर्माना लगाने और समुदायों से निष्कासित करने जैसे ज्यादा गम्भीर दण्ड देने के अधिकार थे। समुदाय से बाहर निकालना एक कड़ा कदम था जो एक सीमित समय के लिए लागू किया जाता था। 4

9. ब्रिटिश सेना की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पर्वतीय स्थानों की व्यवस्था की गई थी। धीरे-धीरे इन पर्वतीय शहरों को रेलवे नेटवर्क के साथ जोड़ा गया। इनमें सर्वप्रथम शिमला 1815-16 में माऊंट आबू को 1818 ई० से 1835 ई० में दार्जिलिंग की स्थापना की गई। 4

खण्ड – ग

(अति लघुत्तरीय प्रश्न)

10. सिन्धुघाटी की सभ्यता के चार बड़े शहर : 2

मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, लोथल, धौलावीर

11. हरिषेण गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त का राजकवि था। उसने गुप्त सम्राट की प्रशंसा में प्रयाग प्रशस्ति लिखी। 2

12. बौद्ध धर्म की दो शिक्षाएँ :

(i) अहिंसा

(ii) चार महान सत्य

(iii) अष्ठमार्ग

(iv) मध्य मार्ग 2

13. विदेशी यात्रियों के भारत में आने के निम्नलिखित उद्देश्य थे :

(i) कार्य एवं रोजगार की तलाश में

(ii) धर्म प्रचार करने तथा तीर्थयात्रा करना

(iii) साहस की भावना से प्रेरित होकर यात्रा करना

(iv) दूसरे देशों से ज्ञान प्राप्त करने के लिए 4

14. गुरु अर्जन देव जी गुरु नानक देव जी के विचारों को संकलित करके एक ग्रन्थ की रचना की जिसे 'आदि ग्रंथ' के रूप से मान्यता मिली। 2

15. आईने अकबरी की दो सीमाएँ :

(i) आईने अकबरी पूरी तरह से दरबारी संरक्षण में लिखी गई है।

(ii) इस पुस्तक में विभिन्न स्थानों पर जोड़ में गलतियाँ पाई गई हैं। 2

16. अकबर ने सुलह-ए-कुल की नीति अपनाई अर्थात सभी के साथ सुलह (किसी से मतभेद नहीं) की नीति अपनाई यह अकबर की सभी धर्मों के प्रति सहनशीलता की नीति भी कहा जाता है। इसे बाद के शासकों ने भी अपनाया। औरंगज़ेब ने उस नीति को बदला था। 2

17. भारत में मुगलवंश की स्थापना बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में विजय प्राप्त करके 1526 ई० में की। 2

18. रैयतवाड़ी भू-राजस्व व्यवस्था की वह प्रणाली थी जिसके अन्तर्गत रैयत अथवा किसान का सरकार से सीधा सम्बन्ध होता था। यह व्यवस्था थामस मुनरो ने 1801 ई० में मद्रास में लागू किया था। 2

19. 1918 ई० में गाँधी जी ने अहमदाबाद के फैक्ट्री मालिकों तथा मजदूरों के बीच विवाद में हस्तक्षेप किया उन्होंने आन्दोलन में मजदूरों का साथ दिया और आमरण अनशन रखा जिसके कारण मजदूरों का 35% मेहनताना बढ़ाया गया। 2

खण्ड – घ

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

20. कुबड़बैल 1

21. श्री वेदव्यास 1

22. सारनाथ 1

23. हरिहरराय एवं बुक्का राय 1

24. अबुल फज़ल 1

25. मद्रास 1

26. झूम की खेती 1

27. 1757 ई० में 1

28. मुहम्मद जायसी 1

29. महात्मा गाँधी ने 1

30. (स) सर आगा खान 1

31. (ब) 22 दिसम्बर, 1939 ई० 1

32. (स) करांची 1

33. (द) 26 जनवरी, 1950 ई० 1

34. (अ) श्री बी० एन० राव 1

35. (अ) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 1

SET – B

खण्ड – क

(निबन्धात्मक प्रश्न)

1. ***जीविका निर्वाह प्रणाली :***

हड़प्पा के पुरास्थलों से अनाज के दाने मिले हैं जो वहाँ कृषि का संकेत देते हैं परन्तु वास्तविक कृषि विधियों के विषय में स्पष्ट जानकारी नहीं मिल पाई।

मुहरों पर किए गए रेखांकन तथा मृण्मूर्तियाँ ये संकेत देती हैं कि लोगों को वृषम (बैल) के विषय में जानकारी थी इस आधार पर पुरातत्वविद् यह मानते हैं कि खेत जोतने के लिए बैलों का प्रयोग होता था चेलिस्तान के कई स्थलों तथा बनावली से मिट्टी से बने हलों के प्रतिरूप मिले हैं। कालीबंगन नामक स्थान पर जोते हुए खेत का साक्ष्य मिला है इसका संबंध आरंभिक हड़प्पा स्तरों से है इस खेत में हल रेखाओं के दो समूह एक-दूसरों को समकोण पर काट रहे हैं। एक खेत में एक साथ दो अलग-अलग फसलें उगाई जाती थी। कृषि के हलों के प्रयोग के अतिरिक्त पुरातत्वविदों ने फसलों की कटाई के लिए प्रयोग किए जाने वाले औजारों को पहचानने का भी प्रयास किया है। इसके लिए हड़प्पा सभ्यता के लोग या तो लकड़ी के हत्थों में फसाए गए पत्थर के फलकों का प्रयोग करते थे या फिर धातु के औजार प्रयोग करते थे।

सिंचाई के सम्बन्ध में अफगानिस्तान में शोतुंघई नामक हड़प्पा से नहरों के अवशेष मिले हैं। परन्तु पंजाब और सिंध में अवशेष नहीं मिले। यह हो सकता है कि सिंचाई के लिए कुओं का प्रयोग किया जाता था। धौलावीरा में मिले जलाशयों का प्रयोग जल एकत्रित के लिए किया जाता था इसी जल से सिंचाई की जाती होगी। 6

अथवा

मोहनजोदड़ो की सड़कें और गलियाँ सीधी होती थीं और एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। मोहनजोदड़ो में निचले नगर में मुख्य सड़क 10.5 मीटर चौड़ी थी इसे प्रथम सड़क कहा गया है अन्य सड़कें 3.6 से 4 मीटर तक चौड़ी थीं गलियाँ एवं गलियारे 1.2 मीटर (4 फुट) या उससे अधिक चौड़े थे। घरों के बनाने से पहले ही सड़कों व गलियों के लिए स्थान छोड़ दिया जाता था। उल्लेखनीय है कि मोहनजोदड़ो के अपने लम्बे जीवनकाल में इन सड़कों पर अतिक्रमण या निर्माण कार्य दिखाई नहीं देता। 6

2. (i) कबीर का अरबी में अर्थ है महान्। उन्हें जन्म से हिन्दू कबीरदास बताया गया है। किन्तु उनका पालन गरीब मुस्लिम परिवार में हुआ जो जुलाहे थे और कुछ समय पहले ही इस्लाम धर्म के अनुयायी बने थे। वैष्णव परिवार की जीवनियों में कहा जाता है कि कबीर को भक्ति मार्ग दिखाने वाले गुरु रामानंद थे। कबीर के बानी तीन परिपाटियों में संकलित है – कबीर बीजक, कबीर ग्रन्थावली तथा आदि ग्रंथ साहिब।

(ii) कबीर के मुख्य उपदेशों का वर्णन :

कबीर सूफी संतों में विशेष स्थान रखते हैं। उन्होंने लोगों को निम्न उपदेश दिए :

(i) उन्होंने बहुदेववाद तथा मूर्तिपूजा का विरोध किया।

(ii) कबीर ने जिक्र और इश्क के सूफी सिद्धान्तों के प्रयोग द्वारा सिमरन नाम पर बल दिया।

(iii) कबीर के अनुसार परम परमात्मा एक है भले ही विभिन्न संप्रदायों के लोग उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हैं।

(iv) उन्होंने ईश्वर को निराकारा बताया है। 6

अथवा

इस अध्याय में निहित .....

(i) चतुर्वेदी ब्राह्मण चारों वेदों के ज्ञाता थे उनकी विष्णु में निष्ठा नहीं थी इस लिए भगवान विष्णु को दास अधिक प्रिय थे।

(ii) दास वर्ण व्यवस्था में शामिल नहीं थे।

(iii) ब्राह्मण सांपों की मूर्तियाँ बनाकर उन पर दूध चढ़ाते थे जबकि जीवित सांप से डरते थे। ऐसा ही आडम्बर भगवान

की मूर्ति को खाना खिलाते थे जब कि भूखे इन्सान को खाना खिलाने से इंकार कर देते थे।

(iv) मुगल शासक विशेषकर अकबर सभी धर्मों का आदर करते थे और इन्होंने सभी धर्मों के अनुयाइयों को पूजा स्थलों के निर्माण की अनुमति थी। 6

3. उन साक्ष्यों की चर्चा कीजिए :

इस सवाल का जवाब देना काफी कठिन है कि विद्रोह की घटनाओं को देखते हुए कि विद्रोह में एक योजना और समन्वय था फिर भी एक घटना इस बारे में कुछ जानकारी देती है विद्रोह के दौरान अवध मिलिट्री पुलिस के कैप्टन हियर्से की सुरक्षा का दायित्व भारतीय सिपाहियों पर था। जहाँ कैप्टन हियर्से वहीं 41वीं नेटिव इंफेंट्री भी तैनात थी। इंफेंट्री का तर्क था कि क्योंकि वे अपने सभी गोरे अफसरों को समाप्त कर चुके हैं इस लिए अवध मिलिट्री का कर्त्तव्य बनता है कि या तो वे हियर्से को मार दे या उसे गिरफ्तार करके 41वीं नेटिव इंफेंट्री को सौंप दें। मिलिट्री पुलिस ने यह बात नहीं मानी तो अब यह निश्चित किया था कि इस मामले को हल करने के लिए एक देशी अफसरों की पंचायत बुलाई जाए।

इतिहासकार चार्ल्स बॉल ने लिखा है कि ये पंचायते रात को होती थी जिनमें निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते थे। अतः हम कह सकते हैं ये सिपाही अपने विद्रोह के कर्त्ता धर्ता स्वयं ही थे। 6

अथवा

अंग्रेजों ने विद्रोह को कुचलने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए :

(i) उत्तर भारत को दोबारा जीतने के लिए तथा विद्रोह को शांत करने के लिए कई कानून पारित किए।

(ii) मई-जून, 1857 ई० में पारित कानूनों द्वारा सारे उत्तर भारत में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया।

(iii) फौजी अफसरों और यहाँ तक आम अंग्रेजों को भी ऐसे हिन्दुस्तानियों पर मुकदमा चलाने और उनको सजा देने का अधिकार दे दिया गया जिन पर विद्रोह में शामिल होने का शक् था।

(iv) सभी प्रकार के कानून और मुकदमें में सामान्य प्रक्रिया रद्द कर दी गई थी और स्पष्ट कर दिया गया था कि विद्रोह की केवल एक ही सजा हो सकती है – सजा-ए-मौत 6

4. भारत छोड़ो आन्दोलन के कारण :

(i) भारत पर जापान का खतरा बराबर बना हुआ था। इसलिए गाँधी जी ने कहा कि अंग्रेजों को चाहिए कि वे भारत को जापान के लिए यदि नहीं तो भारतीयों के लिए छोड़ दें।

(ii) कैबिनेट मिशन की असफलता से निराशा का वातावरण, इसलिए जवाहर लाल नेहरू के अनुसार, ''जनता की निकट निराशा को साहस और प्रतिरोध की भावना में बदलना आवश्यक था।''

(iii) गाँधी जी ने समझ लिया था कि स्वतंत्रता के लिए विद्रोह आवश्यक है उनके विचार ''करो या मरो'' (Do or Die) में परिवर्तित हो गए थे।

(iv) सुभाष चन्द्र बोस के जोशीले भाषण।

(v) भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन बम्बई में हुआ जिसमें 8 अगस्त को ''भारत छोड़ो प्रस्ताव'' पास कर दिया गया।

(vi) द्वितीय विश्व युद्ध से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई जिसके लिए जनता ने अंग्रेजी शासन को जिम्मेदार माना और उसका ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आक्रोश बढ़ता गया। 6

अथवा

सविनय अवज्ञा आन्दोलन की प्रगति :

यह आन्दोलन 1930-31 के बीच चला था इसे नमक आन्दोलन भी कहा जाता है।

(i) बम्बई, बंगाल, मद्रास, मध्य प्रदेश, संयुक्त प्रांत आदि में लोगों ने नमक स्वयं बनाया और उससे नमक कानून भंग हुआ।

(ii) घरासाना में हजारों लागों ने नमक के गोदामों पर आक्रमण किया और पुलिस के अत्याचारों से कुछ व्यक्ति मरे और कई घायल हुए।

(iii) कई स्थानों पर कर्मचारियों ने सरकारी नौकरियों से त्यागपत्र दिया और विधानमण्डलों की सदस्यता त्याग दी।

(iv) विदेशी वस्त्रों को जलाया गया तथा शराब की दुकानों पर धरने दिए गए।

(v) अधिकांश मुसलमानों ने इस आन्दोलन में सरकार का साथ दिया।

(vi) श्रीमती सरोजनी नायडू और खान अब्बुल गफ्फार खान ने इस आन्दोलन में सराहनीय कार्य किया। 6

खण्ड – ख

(लघुत्तरीय प्रश्न)

5. कुषाण वंश का सबसे शक्तिशाली शासक कनिष्क था। उसने 78 ई० से 120 ई० तक राज्य किया। उसने पुरबपुर को अपनी राजधानी बनाया। उसने मथुरा, उज्जैन और पंजाब के शक क्षत्रपों को पराजित किया उसने कश्मीर और मगध पर भी विजय प्राप्त की। उसने चीन के शासक को हराकर ताशकन्द, चारकंद और खोतान के राज्य अपने राज्य में मिलाए। उसने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को अपनाया। कनिष्क को कला से भी विशेष प्रेम था। 4

6. बर्नियर का जन्म फ्रांस के अंजो नामक प्रान्तजु नामक स्थान पर 1620 ई० में हुआ। उनका परिवार कृषि का कार्य करता था। उसने भारत की यात्रा की जिसका वर्णन उसने अपनी किताब ट्रैवल्स इन दी मुगल एंपायर में किया है। वह भारत में 1656 ई० से 1658 ई० तक रहा। 4

7. विजयनगर के सामान्य लोगों से अभिप्राय उन लोगों से है जो सत्ता में भागीदारी नहीं करते थे। इनमें धनी व्यापारी भी शामिल थे। उनके जीवन की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित थीं :

(i) यहाँ पर कुछ धनी व्यापारी भी रहते थे जो मुस्लिम थे। यहाँ पर स्थित मकबरे और मस्जिदों के विशिष्ट नमूने हैं फिर भी उनकी स्थापत्य कला हंपी से मिले मंदिरों की स्थापत्य से मिलती-जुलती है।

(ii) 16वीं शताब्दी का पुर्तगाली यात्री बरबोसा लिखता है कि लोगों के अन्य आवास छप्पर के हैं, परन्तु मजबूत हैं, और व्यवसाय के आधार पर कई लंबी गलियों में व्यवस्थित हैं। इनके बीच कई खुले स्थान भी हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ पर बहुत से पूजा-स्थल और छोटे मंदिर थे जो विभिन्न संप्रदायों से संबंध रखते थे। 4

8. मुगल काल में नई फसलें :

मुगल काल में कुछ नई फसलों का उत्पादन शुरु हो गया था। इनमें सबसे पहला नाम रेशम का था। इस फसल का जीव (कीड़ा) चीन से लाया गया तथा यह बंगाल में बहुत प्रचलित हुआ। इस काल में दूसरी फसल तम्बाकू थी। यह फसल पुर्तगालियों द्वारा 17वीं शदी के आरम्भ अफ्रीकी क्षेत्र से लाई गई। इस काल में अन्य फसलों का उत्पादन भी शुरु हुआ जैसे पटसन, मक्का, जई आदि। 4

9. व्हाइट टाउन शब्द का अर्थ है – वह स्थान अर्थात् वह किला जहाँ अधिकतर यूरोपिय लोग ही रहते थे। अंग्रेजों ने उन स्थानों की बकायदा किलेबंदी कर रखी थी। इसलिए गोरों लोगों के रहने वाले शहर को व्हाइट टाउन कहा गया था।

ब्लैक टाउन का अर्थ है – वह स्थान जहाँ पर केवल काले रंग अर्थात् भारतीय लोग व अन्य जातियों के लोग निवास करते थे। इसमें तंग और टेढ़ी गलियाँ थीं। ये टाउन व्हाइट टाउन से दूर होते थें। 4

खण्ड – ग

(अति लघुत्तरीय प्रश्न)

10. मोहनजोदड़ो के प्रत्येक घर में एक स्नान घर होता था, स्नानघर की नालियाँ दीवार के माध्यम, से सड़क की नालियों से जुड़ी होती थीं। 2

11. मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलीपुत्र थी प्रांतीय केन्द्र : 2

(i) तक्षशिला

(ii) उज्जैन

(iii) तोशाली

(iv) स्वर्ण गिरी

12. त्रिरत्न से अभिप्राय, शुद्ध विश्वास, शुद्ध ज्ञान, शुद्ध व्यवहार। 2

13. इब्नबतूता ने दिल्ली के बारे में लिखा है कि दिल्ली के क्षेत्रों में फैला घनी आबादी वाला शहर है। जिसके चारो ओर बनी प्राचीर अतुलनीय है दीवार की चौड़ाई 11 हाथ है। प्राचीर के अन्दर खाद्य सामग्री, हथियार, बारूद प्राक्षेपास्त्र तथा घेरेबंदी में काम आने वाली मशीनों के संग्रह के लिए भंडार गृह बने हुए थे। 2

14. सूफी शब्द सूफ से निकला है जिसका अर्थ है ऊन अर्थात् जो लोग ऊनी खुरदरे कपड़े पहनते थे उन्हें सूफी कहा जाता था। कुछ विद्वान सूफी शब्द की उत्पत्ति 'सफा' से मानते हैं। जिसका अर्थ साफ होता है। इसी तरह कुछ अन्य विद्वान सूफी को सोफिया अर्थात् शुद्ध आचरण से जोड़ते हैं। 2

15. मुगलकाल में मिल्कियत के अनुसार भूमिः खालसा और जागीर में बटी हुई थी। खालसा भूमि वो होती थी जिसका राजस्व सीधा सरकारी कोष में जाता था जागीर वो होती थी जो मनसबदारों के पास होती जो उनकी सेवाएँ के बदले उन्हें दी जाती थी। 2

16. इतिव्रत वो ग्रन्थ होते थे जो बादशाह अपनी प्रजा के सामने एक प्रबुद्ध राज्य की छवि बनाने के लिए लिखवाते थे, वह इन ग्रन्थों द्वारा लोगों को सन्देश देना चाहते थे उनका राज्य शक्तिशाली तथा उनका विरोधकर्ता सफल नहीं होगा। 2

17. मुगलकाल में प्रांत को सूबा कहा जाता था। और सूबे का मुखिया सूबेदार कहलाता था। 2

18. पहाड़िया लोगों द्वारा अपनाई गई झूम खेती क्या थी ? पहाड़िया लोग जंगल में झाड़ियों को काट कर व घास-फूस को जलाकर एक छोटा सा जमीन का टुकड़ा निकाल लेते थे। यह खेत ऊपजाऊ होता था। इसमें वे लोग विभिन्न तरह की दालें व ज्वार, बाजरा उगाते और फिर वर्षों के लिए उसे खाली छोड़ देते थे ताकि व पुनः उर्वर हो जाए। 2

19. भारतीयों को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करने में महात्मा गाँधी जी का सबसे अधिक योगदान है। इसलिए उन्हें भारत का राष्ट्रपिता कहा जाता है। 2

खण्ड – घ

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

20. दक्षिण भारत से 1

21. महाभारत में 1

22. पाली भाषा में 1

23. 1336 ई० में 1

24. टोडरमल ने 1

25. दामिनी कोह नाम उस जमीन को दिया गया था जो सन्चालों को दी गई थीं। 1

26. किसान अथवा कृषक 1

27. लाटरी कमेटी शहर के विकास के लिए लाटरी बेच कर धन इक्ट्ठा करती थी। 1

28. पंजाबी भाषा में 1

29. अमृतसर में 1

30. (अ) 1906 ई० में 1

31. (ब) सर आग़ा खाँ 1

32. (द) माउंटबेटन योजना 1

33. (अ) दिल्ली 1

34. (ब) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 1

35. (स) 1946 ई० में 1

SET – C

खण्ड – क

(निबन्धात्मक प्रश्न)

1. शिल्प उत्पादन के लिए प्रयुक्त कच्चे माल की जानकारी :

हड़प्पा सभ्यता में चन्हूदड़ो, मोहनजोदड़ो की तुलना में एक बहुत ही छोटी सी बस्ती थी, जो पूर्ण रूप से शिल्प उत्पादन से जुड़ी हुई

थी। शिल्प कार्यों में मनके बनाना, शंख की कटाई, धातु कर्म, मुहर निर्माण तथा बाट बनाना शामिल थे।

मनकों के निर्माण में प्रयुक्त पदार्थों में विशेष थे : कार्नीलियन (लाल रंग का) जैसपर, स्फटिक, क्वार्ट्ज तथा खेलखड़ी जैसे – पत्थर, तांबा, कांसा तथा सोने जैसी धातुएँ तथा शंख फयान्स और पक्की मिट्टी सभी का प्रयोग मनके बनाने के लिए होता था।

चन्हूदड़ो के अतिरिक्त नागेश्वर तथा बालाकोट दोनों बस्तियाँ समुद्रतट के समीप स्थित थीं, ये शंख, सेलती हुई बस्तियों जिनमें चूड़ियाँ, करछियाँ तथा पच्चीकारी की वस्तुएँ शामिल हैं के निर्माण के विशेष केन्द थे जहाँ से ये माल दूसरी बस्तियों तक ले जाया जाता था। 6

अथवा

मोहनजोदड़ो की कुछ विशिष्टताओं का वर्णन :

(i) मोहनजोदड़ो : एक नियोजित शहरी केन्द्र

(ii) निचला शहर

(iii) जल-निकास प्रणाली

(iv) आवास अथवा मकानों का निर्माण गृह स्थापत्य

(v) सड़कें तथा गलियाँ

(vi) दुर्ग

(vii) मालगोदाम अथवा अन्नागार

(viii) विशाल स्नानागार 6

2. बाबा गुरु नानक देव की मुख्य शिक्षाओं का वर्णन तथा विचारों का संप्रेषण : बाबा गुरु नानक देव (1469-1539) की शिक्षाएँ उनके भजनों में निहित हैं। इनसे पता चलता है :

(i) उन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया।

(ii) सभी बाहरी आडंबरों को उन्हानें अस्वीकार किया जैसे – यज्ञ, अनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति-पूजा व कठोर तप।

(iii) हिन्दू और मुसलमानों के धर्म-ग्रन्थों को भी उन्होंने नकारा।

(iv) बाबा नानक के लिये परम पूर्ण रब का कोई लिंग या आकार नहीं था।

(v) रब की उपासना के लिए एक सरल उपाय निरंतर नाम का जाप बताया।

विचारों का संप्रेषण :

(i) उन्होंने स्थानीय भाषा पंजाबी भाषा के प्रयोग पर बल दिया और शब्दों का उच्चारण किया। बाबा गुरु नानक यह शब्द अलग-अलग रागों में गाते थे और उनका सेवक मरदाना रबाब बजाकर उनका साथ देता था।

(ii) गुरु नानक देव जी ने अपने अनुयायियों को एक समुदाय में संगठित किया। सामुदायिक उपासना (संगत) के नियम निर्धारित किये, जहाँ सामूहिक रूप से पाठ होता था।

4 + 2 = 6

अथवा

अलवार, नयनार और वीर शैवों द्वारा जाति प्रथा की आलोचना :

अलवार और नयनार तमिलनाडु के भक्ति संत थे अलवार विष्णु के नयनार शिव के भक्त थे।

(i) कुछ इतिहासकार मानते हैं कि अलवार और नयनारों ने जाति प्रथा की कड़ी आलोचना की तथा ब्राह्मण जाति के विरुद्ध आवाज़ उठाई कुछ सीमा तक यह बात सत्य प्रतीत होती है क्योंकि भक्ति संत विविध समुदायों से थें जैसे - ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान आदि।

(ii) अलवार और नयनार संतों ने अपनी रचनाओं को वेदों के समान बताकर ब्राह्मणों की प्रभुसत्ता को अस्वीकारा उन्होंने सभी को ईश्वर की संतान बताया है तमिल साहित्य में ***तोदयाड़िंप्पोहि*** नामक एक ब्राह्मण अलवार के काव्य में एक स्थान पर लिखता है "चतुर्वेदी जो अजनबी है और तुम्हारी सेवा के प्रति निष्ठा नहीं रखते, उनसे भी ज्यादा आप (हैं विष्णु) उन दासों को पसन्द करते हैं जो आप के चरणों से प्रेम रखते हैं। चाहे वे वर्ण व्यवस्था से परे हों।"

इसी प्रकार अलवार संतों के एक मुख्य काव्य संकलन नलविरादिव्य प्रबंधम् का उल्लेख तमिल वेद के रूप में किया गया है।

(iii) वीर शैव कर्नाटक से संबंध रखते थे वे बासवन्ना के अनुयायी थे। उन्होंने जाति प्रथा तथा कुछ समुदायों के दूषित होने की ब्रह्मणीय अवधारणा का विरोध किया। 6

3. 1857 ई० की क्रांति में भारतीय सैनिक क्यों शामिल हुए ?

(i) 1857 ई० में एक ऐसा कानून पास किया गया जिसके अनुसार भारतीय सैनिकों को समुद्र पार भी भेजा जा सकता था। परन्तु हिन्दू सैनिक समुद्र पार जाना अपने धर्म के विरुद्ध मानते थे।

(ii) परेड के समय भारतीय सैनिकों से अभद्र व्यवहार किया जाता था।

(iii) भारतीय सैनिकों को अंग्रेजों की अपेक्षा कम वेतन दिया जाता था।

(iv) अंग्रेज अधिकारी भारतीय सैनिकों के सामने भारतीय सभ्यता का मजाक उड़ाते थे।

(v) चर्बी वाले कारतूस। 6

अथवा

1857 के घटनाक्रम के लिए धार्मिक विश्वास :

(i) भारतवासियों को ईसाई बनाना

(ii) अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार

(iii) विलियम बैटिक के सामाजिक सुधार

(iv) हिन्दू ग्रन्थों की निंदा करना

(v) 1856 ई० में General service Enlistment Act पास करना

(vi) चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग 6

4. (i) राष्ट्रीय आन्दोलन ने एक नए युग में प्रवेश किया। सभी वर्गों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस कारण उनमें एक नई राष्ट्रीय जागृति का विकास हुआ।

(ii) इस आन्दोलन में हिन्दू तथा मुसलमान कन्धे से कन्धा मिलाकर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लड़े। परिणामस्वरूप उनमें परस्पर एकता मजबूत हुई।

(iii) इस आन्दोलन के कारण कांग्रेस पार्टी लोगों में बहुत लोकप्रिय हुई। उन्हें यह विश्वास हो गया कि उसके अधीन भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त करवाया जा सकता है।

(iv) आन्दोलन के दौरान सरकार द्वारा आन्दोलनकारियों पर किए गए अत्याचारों से उनके मन में ब्रिटिश सरकार के प्रति भय जाता रहा।

(v) विदेशी माल के बहिष्कार तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग से भारतीय उद्योगों को प्रोत्साहन मिला।

(vi) राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के कारण शिक्षा के प्रसार को प्रोत्साहन मिला। 6

अथवा

(i) ***गाँधी जी के आखिरी बहादुराना दिनों का वर्णन :***

15 अगस्त, 1947 को गाँधी राजधानी में नहीं थे। वे उस समय कलकत्ता में साम्प्रदायिक सद्भावना को बहाल करने में लगे हुए थे। वे पीड़ितों को सान्त्वना देते हुए अस्पतालों और शरणार्थी शिवरों का चक्कर लगा रहे थे। उन्होंने सिखों, हिन्दुओं और मुसलमानों को आपसी बैर की भावना को छोड़कर अतीत को भुलाकर भाई-चारे और शान्ति से रहने पर बल दिया। गाँधी जी के व्यापक प्रभाव को देखते हुए माउंटबेटन ने उन्हें "एक अकेली फौज" कहा।

(ii) ***धर्मनिरपेक्षता में दृढ़ आस्था :*** उन्होंने दो राष्ट्र-सिद्धान्तों का विरोध किया। कांग्रेस ने आश्वासन दिया कि वह अल्पसंख्यकों के नागरिक अधिकारों के किसी भी अतिक्रमण के विरुद्ध हर मुमकिन रक्षा करेंगे।

(iii) ***शरणार्थियों के प्रति चिन्ता :*** बंगाल में शान्ति की स्थापना के बाद गाँधीजी दिल्ली आए। उस समय तक दिल्ली में पंजाब से बहुत शरणार्थी आ चुके थे।

(iv) **गाँधीजी की शहादत :**

20 जनवरी, 1948 को गाँधीजी पर हमला हुआ लेकिन वे किसी प्रकार विचलित नहीं हुए। वे पाकिस्तान के साथ सम्मान और दोस्ती के सम्बन्ध बनाए रखने पर जोर दे रहे

थे। 30 जनवरी, 1948 की शाम को दैनिक प्रार्थना के समय एक धर्मान्ध के हाथों शहीद हो गए। 6

खण्ड – ख

(लघुत्तरीय प्रश्न)

5. दक्षिण भारत में पाण्ड्य राजाओं की राजधानी मदुरा में तमिल कवियों के सम्मेलन हुए। उन सम्मेलनों को संगम के नाम से जाना जाता है। ये तीन सम्मेलन (संगम) लगभग 300 ई० पूर्व से 300 ई० के बीच बुलाए गए। इन संगमों को पाण्ड्य शासकों का संरक्षण प्राप्त था इन संगमों के कारण संगम साहित्य की रचना हुई। वर्तमान में संगम साहित्य में उपलब्ध ग्रन्थों के नाम पत्युप्पात एतुत्थोकई, चिल्पादिकारम् मणिमेखलय, जीवक चिन्तामणि आदि। 4

6. **इब्नबतूता द्वारा दास प्रथा का वर्णन :** इब्नबतूता लिखता है कि दास बाजार में उसी प्रकार बिकते थे जैसे कि अन्य दैनिक वस्तुएँ। लोग इन दास-दासियों को घरेलू कार्यों तथा उपहार इत्यादि के लिए खरीदते थे। वह जब स्वयं सिन्धु पहुँचा तो उसने सुल्तान मुहम्मद तुगलक को भेंट देने के लिए घोड़े, ऊँट तथा दास खरीदे थे। 4

7. विजयनगर राज्य के पतन के कारण बताओ :

(i) शासन में सारी शक्तियाँ राजा के पास थी। इस लिए संकट के समय जनता ने राजा का साथ नहीं दिया।

(ii) सिंहासन प्राप्ति के लिए राज्य में गृह-युद्ध चलते रहते थे।

(iii) कृष्ण देव के पश्चात् इस राज्य के सभी शासक निर्बल थे।

(iv) विजयनगर के पड़ोसी राज्य बहमनी राज्य के साथ युद्ध होते रहते थे।

(v) तालिकोट के युद्ध में विजयनगर का शासक मारा गया इस लड़ाई के पश्चात् इस राज्य का पतन हो गया। 4

8. जंगलवासियों के जीवन में बदलाव के किन्हीं दो कारणों का वर्णन : मुगलकाल में जंगलवासियों के जीवन में बदलाव के दो कारण इस प्रकार हैं :

(i) व्यापार के कारण जंगलों की सफाई की गई तथा शहद, दूध व लाख की खरीद-बेचने उनकी परम्परागत जीवन शैली को बदला।

(ii) राज्यों की विस्तारवादी नीति व हाथियों की आवश्यकता ने जंगलवासियों को प्रभावित किया। राज्य ने उन्हें सुरक्षा दी और उन्होंने राज्य को हाथी दिये। 4

9. नए शहरों में सामाजिक सम्बन्धः

(i) नए यातायात के साधनों का विकास

(ii) टाऊन हाल, सार्वजनिक पार्कों, रंग शालाएँ और सिनेमाहाल जैसी सुविधाएँ ने लोगों के आपसी मेल-जोल को बढ़ावा दिया।

(iii) मध्यम् वर्ग का विकास, कलर्कों, शिक्षकों, इंजीनियरों की माँग बढ़ी।

(iv) समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में लोग अपना मत व्यक्त करते थे। 4

खण्ड – ग

(अति लघुत्तरीय प्रश्न)

10. सर जॉन मार्शल भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग के महानिर्देशक थे। उन्होंने हड़प्पा की खुदाई में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 2

11. अशोक के धर्म के सिद्धान्त :

(i) बड़ों का आदर

(ii) छोटों के प्रति प्रेमभाव

(iii) सेवा व सौम्य व्यवहार

(iv) सच्चे रीति-रिवाज

(v) अहिंसा 2

12. बौद्ध धर्म के चार महान सत्य हैं :

(i) संसार दुखों का घर है।

(ii) दुःखों का कारण मनुष्य की तृष्णा है।

(iii) तृष्णा पर विजय पाकर दुःखों से छुटकारा मिल सकता है।

(iv) अष्टमार्ग पर चलकर तृष्णा पर विजय पायी जा सकती है। 2

13. रिहला का लेखक : इब्नबतूता था

ट्रेवल्स इन द मुगल एंपायर के लेखक : बर्नियर था 2

14. अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है जिन्हें लोग गरीब नवाज़ दरगाह कहते हैं। 2

15. अकबर के काल में भूमि के विभाजन को निम्नलिखित प्रकार से बाँटा गया था :

(i) पोलज

(ii) परौती

(iii) चचर

(iv) बंजर 2

16. अकबर का जन्म 1542 ई० में सिन्ध के पास अमरकोट नामक स्थान पर हुआ था। 2

17. अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर की मृत्यु 1862 ई० में रंगून में हुई थी। 2

18. पूना सार्वजनिक सभा का संगठन पूना शहर के मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों ने 1873 ई० में किया था जिन्होनें राजस्व की दरों को कम करने के लिए याचिका दायर की थी। 2

19. असहयोग आन्दोलन एक अहिंसात्मक आन्दोलन था परन्तु 5 फरवरी, 1922 ई० को चौरा-चौरी नामक स्थान पर भीड़ ने 22 पुलिस कर्मचारियों को एक कमरे में बन्द करके आग लगा दी जो मारे गये थे जिससे महात्मा गाँधी ने आन्दोलन को स्थगित कर दिया। 2

खण्ड - घ

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

20. मृतकों का टीला 1

21. जो स्त्री शादी के बाद अपने घर से उपहार या धन लेकर आती है उसे स्त्री धन कहा जाता है। 1

22. जैन धर्म में तीर्थंअंकर शब्द का अर्थ है। ''संसार रूपी सागर से पार उतारने वाला'' 1

23. संगम वंश 1

24. दीने इलाही की स्थापना अकबर ने 1582 ई० में की थी। 1

25. पहाड़िया लोग महुआ के फूल बेचते थे रेशम के कोया और राल तथा काठ कोयला बनाने की लकड़ी बेचते थे। 1

26. 1765 ई० में 1

27. ब्लैक टाऊन में भारतीय रहते थे 1

28. गुरु गोबिन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना 13 अप्रैल, 1699 ई० में की 1

29. 1930 ई० में 1

30. (अ) महात्मा गाँधी ने 1

31. (ब) 23 मार्च, 1940 ई० 1

32. (स) 14 अगस्त, 1947 ई० 1

33. (अ) डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा 1

34. (ब) 16 मई, 1946 ई० 1

35. (स) हिन्दुस्तानी 1

SET – D

खण्ड – क

(निबन्धात्मक प्रश्न)

1. भारतीय सभ्यता को हड़प्पा संस्कृति की क्या देन है ?

(i) नगर सभ्यता अथवा नगर योजना

(ii) निवास स्थानों की सुन्दर बनावट

(iii) आभूषण व श्रृंगार

(iv) धार्मिक समानता 6

अथवा

हड़प्पाई लिपि से हड़प्पा सभ्यता को जानने में कोई मदद नहीं मिलती। बल्कि ये भौतिक साक्ष्य हैं जो पुरातत्वविदों को हड़प्पाई जीवन को ठीक प्रकार से पुनर्निर्मित करने में सहायक होते हैं। ये वस्तुएँ-मृदभाण्ड, औजार, आभूषण, घरेलू सामान हो सकती हैं। कपड़ा, चमड़ा, लकड़ी तथा सरकंडे सड़ जाते हैं। जो वस्तुएँ बच जाती हैं वे हैं पत्थर, पक्की मिट्टी तथा धातु। इसके बाद पुरातत्त्वविद अपनी खोजों को वर्गीकृत करते हैं। कभी-कभी पुरातत्वविदों को अप्रत्यक्ष साक्ष्यों का सहारा लेना पड़ता है। तदुपरान्त सन्दर्भ की रूपरेखाओं को विकसित करना पड़ता है। 6

2. सूफी और भक्ति प्रचारकों ने अपने विचारों को जनता तक पहुचाने के लिए स्थानीय भाषाओं का प्रयोग किया ताकि आम लोगों को उनके विचार समझने में आसानी रहे उदाहरणतय :

(i) अलवार तथा नयनार संतों ने अपना प्रचार तमिल भाषा में किया।

(ii) भक्त कबीर के दोहे तथा छंद कई भाषाओं में मिलते हैं इनमें से कुछ संत भाषा में है जो निर्गुण कवियों की विशेष बोली थी।

(iii) सूफी संतों ने भी स्थानीय भाषाओं को अपनाया जैसे – कि बाबा फरीद ने पंजाबी भाषा को अपनाया।

(iv) गुरु नानक देव जी ने भी पंजाबी भाषा में अपना प्रचार किया। 6

अथवा

किस हद तक उप-महाद्वीप में पाई जाने वाली मस्जिदों :

उप-महाद्वीप में विभिन्न मुस्लिम शासकों ने देश में कई मस्जिदों का निर्माण करवाया। इन मस्जिदों की स्थापत्य कला में स्थानीय परम्पराओं के साथ एक सार्वभौमिक धर्म का जटिल मिश्रण मस्जिदों की स्थापत्य कला में दिखाई देता है। मस्जिदों के कुछ स्थापत्य सम्बन्धी तत्त्व सभी जगह एक समान थे : जैस इमारत का मक्का की ओर संकेत करना जो मेहराब तथा मीनार की स्थापना से लक्षित होता था परन्तु बहुत से तत्त्व ऐसे थे जिनमें भिन्नता दिखाई देती है जैसे छत और निर्माण की सामग्री।

उदाहरण के लिए 13वीं शदी में केरल में बनी एक मस्जिद की छत मंदिर के शिखर से मिलती-जुलती है। 6

3. विद्रोह की असफलता के कारण :

(i) समय से पूर्व आरम्भ

(ii) योग्य नेताओं का अभाव

(iii) युद्ध सामग्री तथा प्रशिक्षित सैनिकों का अभाव

(iv) निश्चित योजना वा लक्ष्य का अभाव

(v) सीमित विद्रोह

(vi) नेताओं में एकता का अभाव

(vii) अंग्रेजों की दमनकारी नीति 6

अथवा

सिपाहियों का विद्रोह धीरे-धीरे जन विद्रोह बन गया। परन्तु नेतृत्व व संगठन के बिना अंग्रेजों से लोहा नहीं लिया जा सकता था। इसलिए उन्होंने नेतृत्व के लिए कई नेताओं से सम्पर्क किया।

(i) सर्वप्रथम मेरठ के सिपाही दिल्ली गए उन्होंने बहादुर शाह को अपना-नेता बनाया उन्होंने नाममात्र का नेता बनने की जिम्मेदारी तभी स्वीकार की जब कुछ सिपाही शिष्टाचार की अवहेलना करते हुए लाल किले के मुगल दरबार में जा घुसे।

(ii) कानपुर में सिपाहियों ने पेशवा बाजीराव II के उत्तराधिकारी नाना साहिब को अपना नेता बनने के लिए विवश किया।

(iii) झांसी की रानी को भी आम जनता के दबाव में विद्रोह का नेतृत्व संभालना पड़ा।

(iv) अवध में नवाब वाजिद अली शाह जैसे लोकप्रिय शासक गद्दी से हटा देने और उसके राज्य पर अधिकार कर लेने की यादें लोगों के मन में अभी भी ताजा थी। अतः लखनऊ में ब्रिटिश राज के ढहने के समाचार पर लोगों ने नवाब के युवा पुत्र विरजिस कद्र और राजा जीनत महल को अपना नेता चुना। 6

4. असहयोग आन्दोलन एक तरह का प्रतिरोध :

कारण :

(i) प्रथम युद्ध के प्रभाव

(ii) रौलट ऐक्ट

(iii) जलियाँवाला बाग की घटना

(iv) खिलाफत आंदोलन

कार्यक्रम :

(i) नकारात्मक एवं सकारात्मक आंदोलन की प्रगति : गाँधी द्वारा तथा अन्य नेताओं द्वारा पदवियाँ तथा मैडल त्यागना, सरकारी स्कूलों का बहिष्कार, वकीलों द्वारा अदालतों का बहिष्कार, राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना, विदेशी वस्त्रों की होली, हिन्दू-मुस्लिम एकता इत्यादि।

(ii) आन्दोलन का स्थगित होना

(iii) चौरा-चौरी की घटना

(iv) गाँधी की गिरफ्तारी और मुकदमा 6

अथवा

निजी लेख या आत्म कथाएँ :

किसी व्यक्ति के जीवन को समझने के लिए निजी पत्र एवं उस व्यक्ति द्वारा लिखित आत्मकथा एक महत्त्वपूर्ण, भूमिका निभाती है क्योंकि इन निजी पत्रों में प्रायः वे बातें भी मिल जाती हैं जिन्हें सार्वजनिक तौर पर अभिव्यक्त नहीं किया गया होता। निजी पत्रों में बहुत सी अन्य बातों के अतिरिक्त लिखने वाले की पीड़ा, आक्रोश,

बेचैनी और असंतोष, आशा और हताशा इत्यादि की झलक भी मिल जाती है। राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में निजी पत्राचार में ऐसे कितने ही उदाहरण मिल जायेंगे। उदाहरण के लिए 1936 के वर्ष के कुछ पत्रों को देखें तो आत्मकथाएँ भी हमें उस अतीत का ब्योरा देती है जो मानवीय विवरणों के हिसाब से काफी समृद्ध होता है। परन्तु यहाँ भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम आत्मकथाओं को किस तरह पढ़ते हैं और उनकी कैसे व्याख्या करते हैं हमें यह याद रखना चाहिए कि ये आत्मकथाएँ प्रायः स्मृति के आधार पर लिखी जाती थी उनसे हमें केवल उन्हीं बातों का पता चलता है कि लिखने वाले को क्या याद रहा था उसे कौन-सी चीजें महत्त्वपूर्ण दिखाई दी या वह, क्या याद रखना चाहता था फिर उसने क्या याद रखा।

आत्मकथा में प्रायः लेखक वही लिखता है जिसे वह स्वयं दूसरों की नजरों में दिखाना चाहता है। आत्मकथा पढ़ते समय हमें उन बातों को ढूढ़ना चाहिए जिन्हें लेखक उन्हें छिपाने का प्रयास कर रहा है। 6

खण्ड - ख

(लघुत्तरीय प्रश्न)

5. अशोक के शिलालेख ब्रह्मो लिपि में है यह लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी। इस ब्रह्मी लिपि को पढ़ने में ICS अधिकारी जेम्स प्रिसेप ने 1838 में पढ़ने में सफलता पाई। 4

6. अलबिरूनी उज्जबेकिस्तान में स्थित ख्वारिज्म का निवासी था 1017 ई० में गजनी के सुल्तान महमूद ने ख्वारिज्म पर आक्रमण कर दिया और यहाँ के कई कवियों तथा विद्वानों को अपने साथ गजनी ले गया। अलबिरूनी भी इनमें से एक था। 4

7. विजयनगर शहर के खेतों को किलेबन्दी में लेने का :

(i) सर्वप्रथम लाभ यह था कि लोगों के साथ फसलों की भी सुरक्षा हो जाती थी।

(ii) इससे युद्ध काल में खाद्यान का संकट नहीं होता था परन्तु इस व्यवस्था का दोष यह था।

(a) यह व्यवस्था काफी महंगी होती थी

(b) कठिन परिस्थितियों में यह किसानों के लिए असुविधाजनक थी। 4

8. आईने-ए-अकबरी को अबुल-फज़ल ने लिखा था। अकबर ने उसे अपने शासन काल की सभी घटनाओं को लिखने का कार्य दिया गया। आईने अकबरी के लेखक का उद्देश्य अकबर के शाही कानूनों को सारांश में लिखना था। 4

9. औपनिवेशक मद्रास में शहरी और ग्रामीण तत्व किस हद तक घुल-मिल गए थे ?

मद्रास को बहुत से गाँवों को मिलाकर विकसित किया गया था। यूरोपवासी व्हाइट टाऊन में रहते थे जिसका केन्द्र फोर्ट सेंट जार्ज किला था। धीरे-धीरे यूरोपवासी भारतीय देवताओं के दर्शनों के लिए उन्होंने मंदिर भी बनवाएं। मद्रास में कुछ दुभाषी व्यापारी ऐसे

भारतीय थे जो स्थानीय भाषा और अंग्रेजी दोनों ही बोलते थे वे भारतीय समाज तथा गोरों के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाते थे। संपत्ति इकट्ठा करने के लिए वे सरकार में अपनी पहुँच का प्रयोग करते थे। ब्लैक टाऊन में परोपकारी कार्यों और मंदिरों को संरक्षण प्रदान करने के कारण समाज में उनकी स्थिति काफी मजबूत थी। 4

खण्ड – ग

(अति लघुत्तरीय प्रश्न)

10. हड़प्पा लिपि हड़प्पा की मोहरों से प्राप्त हुई है। इसमें बहुत से चिह्नों का प्रयोग किया गया है। उनकी संख्या 375-400 के बीच बताई गयी है। यह लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। इन चित्रों या शब्दों को कोई विद्वान नहीं पढ़ पाया है। 2

11. कौटिल्य : चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु थे। उन्होंने राजनीति पर अर्थशास्त्र नामक ग्रन्थ लिखा था। 2

12. जैनधर्म का विभाजन दिगम्बर और श्वेताम्बर नामक दो उप-सम्प्रदायों में हुआ था। 2

13. अलबिरूनी की दो समस्याएँ :

(i) पहली समस्या थी संस्कृत भाषा जो उसे नहीं आती थी जो अरबी व फारसी से भिन्न थी।

(ii) दूसरी बाधा थी यहाँ की धार्मिक आस्था तथा रीति-रिवाज जिन्हें समझना उसके लिए कठिन था। 2

14. सूफी सिलसिलों में धार्मिक गुरु को मुर्शीद कहते थे और उनके शिष्यों को मुरीद कहते थे। 2

15. खुद-काश्त दो शब्दों के मेल से बना है खुद एवं काश्त जिसका अर्थ है वह व्यक्ति जो अपनी भूमि को स्वयं जोतता हो। 2

16. अकबर ने इबादतखाना फतेहपुर सीकरी में 1579 ई० में स्थापित किया था। 2

17. औरंगज़ेब का काल 1656 ई० से 1707 ई० तक का था। 2

18. जमींदारों की शक्ति पर नियन्त्रण करने के लिए कम्पनी ने उनकी सैनिक टुकड़ियों को भंग कर दिया। जमींदारों से पुलिस और न्याय व्यवस्था के अधिकार छीन लिए। 2

19. मार्च, 1930 ई० में महात्मा गाँधी ने 240 मील की पैदल यात्रा करके समुद्र तट पर दांडी नामक स्थान पर नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा। इसके पश्चात् नमक घर-घर में बनने लगा और अंग्रेज सरकार की भारतीयों को नमक बनाने की अनुमति देनी पड़ी। 2

खण्ड – घ

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

20. मोहनजोदड़ो की खोज रखालदास बनर्जी ने 1922 ई० में की थी। 1

21. पितृवंशिकता का अर्थ है वंश परम्परा जो पिता के पुत्र के पुत्र, फिर पौत्र और प्रपौत्र आदि से चलती है। 1

22. महात्मा बुद्ध को बचपन में सिद्धार्थ के नाम से पुकारा जाता था। 1

23. अमर शब्द का अर्थ युद्ध व लड़ाई से है अर्थात अमर नायक प्रशासन व सेना के प्रमुख व्यक्ति होते थे जो किसानों दस्तकारियों, व्यापारियों से कर वसूलते थे। 1

24. फारसी 1

25. जमींदारों ने अपनी जमीनों को बचाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण हथकंडा बेनामी खरीदारी का अपनाया। 1

26. 1793 ई० में लार्ड कार्नवालिस ने 1

27. 1911 ई० में 1

28. गुरु नानक देव जी ने 1

29. 1869 ई० में 1

30. (अ) रहमत अली 1

31. (स) सरदार पटेल 1

32. (अ) जुलाई, 1946 ई० 1

33. (स) 26 नवम्बर, 1949 ई० 1

34. (स) 395 1

35. (ब) सभी धर्मों का आदर 1